ISSN 2454 - 5163

प्रकाशन तिथि : 26 मार्च 2016, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 34, अंक 9, कुल पृष्ठ 32

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान (393)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com
ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

सम्बन्ध-शक्ति

इस जगत में मेरा कौन है और किसके साथ मुझे परमार्थ सम्बन्ध है - उसके भान बिना, पर को अपना मानकर, पर के साथ सम्बन्ध जोड़कर जीव संसार में भटक रहा है। आत्मा का "स्व" क्या है और वास्तविक सम्बन्ध किसके साथ है - यह इस "संबंध-शक्ति" में बतलाया है। यह संबंध-शक्ति भी आत्मा का पर के साथ संबंध नहीं बतलाती, किन्तु अपने में ही स्व-स्वामी संबंध बतलाकर पर के साथ का संबंध तुड़वाती है। इसप्रकार पर से भिन्न आत्मा को बतलाती है। आत्मा ज्ञान-दर्शन-आनन्द स्वरूप अपने भाव का ही स्वामी है और वे भाव ही आत्मा का स्व है- ऐसा जानकर, स्वभाव के साथ संबंध जोड़ना और पर के साथ संबंध तोड़ना - ऐसा एकत्व-विभक्तपना समयसार का तात्पर्य है। उस एकत्व-विभक्तपने में ही आत्मा की शोभा है।

- आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 586

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 34 (वीर नि. संवत् - 2542) 393 अंक : 9

धनि ते साधु रहत... !

धनि ते साधु रहत वनमाहीं।
शत्रु-मित्र सुख-दुःख सम जानैं, दिरसन देखत पाल पलाहीं।।टेक।।
अट्ठाईस मूलगुण धारै, मन वच काय चपलता नाहीं।
ग्रीषम शैल शिखा हिम तटिनी, पावस बरखा अधिक सहाहीं।।
धनि ते साधु रहत... ।।1।।
क्रोध मान छल लोभ न जानैं, राग-दोष नाहीं उनपाहीं।
अमल अखंडित चिद्गुण मंडित, ब्रह्मज्ञान में लीन रहाहीं।।
धनि ते साधु रहत... ।।2।।
तेई साधु लहैं केवल पद, आठ काठ दह शिवपुरी जाहीं।
'द्यानत' भवि तिनके गुण गावैं, पावैं शिवसुख दुःख नसाहीं।।
धनि ते साधु रहत... ।।3।।

- कविवर पण्डित द्यानतरायजी

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

(क) बहिरंग तप

१. अनशन – लौकिक फल की अपेक्षा बिना **संयम की सिद्धि, राग का उच्छेद, कर्मों का विनाश, ध्यान और स्वाध्याय की सिद्धि के लिए चार प्रकार के आहार का त्याग करना, अनशन अर्थात् उपवास** नामक तप है।

उपवास तो आत्मस्वरूप के समीप ठहरने का नाम है। नास्ति से भी विचार करें तो पंचेन्द्रिय के विषय, कषाय और आहार के त्याग को उपवास कहा गया है, शेष तो सब लंघन है।

''कषायविषयाहारो त्यागो यत्र विधीयते।
उपवास: स विज्ञेय: शेषं लंघनकं विदु:।।[१]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि कषाय, विषय और आहार के त्यागपूर्वक आत्मस्वरूप के समीप ठहरना – **ज्ञान-ध्यान में लीन रहना ही वास्तविक उपवास है।**

२. अवमौदर्य – संयम को जागृत रखने के लिए, विकारों की शान्ति के लिए, **संतोष और स्वाध्याय आदि की सुखपूर्वक सिद्धि के लिए अल्पाहार लेना, अवमौदर्य तप है।**

अनशन में भोजन का पूर्णत: त्याग होता है, पर अवमौदर्य में एक बार भोजन किया जाता है; इसकारण इसे एकाशन भी कहते हैं। यद्यपि इसमें **एक बार भोजन किया जाता है, तथापि भरपेट नहीं;** इसकारण इसे ऊनोदर भी कहते हैं।

३. वृत्तिपरिसंख्यान – जब मुनिराज आहार के लिए निकलते हैं तो अनेक

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ २३१

प्रकार के नियम लेकर निकलते हैं कि मुझे इसप्रकार आहार प्राप्त होगा, तब ही लूँगा, अन्यथा नहीं; इस प्रवृत्ति को वृत्तिपरिसंख्यान तप कहते हैं।

भोजन को जाते समय अनेक प्रकार की अटपटी प्रतिज्ञाएँ ले लेना, उसकी पूर्ति पर ही भोजन करना; अन्यथा उपवास करना, वृत्ति-परिसंख्यान है।

४. रसपरित्याग – इन्द्रियों के दमन के लिए, नींद पर विजय पाने के लिए और सुखपूर्वक स्वाध्याय करने के लिए घी, दूध, दही, तेल, नमक और मीठा – इनमें कोई एक या एकाधिक रस का त्याग कर देना, रसपरित्याग तप है।

षट्रसों में कोई एक, दो या छहों ही रसों का त्याग करना, नीरस भोजन लेना, रसपरित्याग है।

उपर्युक्त चारों ही तप भोजन या भोजन-त्याग से संबंधित हैं। इनमें इच्छाओं का निरोध एवं शारीरिक आवश्यकताओं के बीच कितना संतुलित नियमन है – यह द्रष्टव्य है।

इनमें एक वैज्ञानिक क्रमिक विकास है। यदि चल सके तो भोजन करो ही नहीं **(अनशन);** न चले तो एक बार दिन में शान्ति से अल्पाहार लो **(अवमौदर्य);** वह भी अनेक नियमों के बीच में बँध कर, अनर्गल नहीं **(वृत्तिपरिसंख्यान);** और जहाँ तक बन सके नीरस हो; क्योंकि **सरस आहार गृद्धता बढ़ाता है; पर शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति करनेवाला होना चाहिए, अत: सभी रसों का सदा त्याग नहीं, किन्तु बदल-बदल कर विभिन्न रसों का विभिन्न समयों पर त्याग हो, जिससे शरीर की आवश्यकता की पूर्ति भी होती रहे और जिह्वा की लोलुपता पर भी प्रतिबन्ध रहे (रसपरित्याग)।**

इससे स्पष्ट है कि तप शरीर के सुखाने का नाम नहीं, इच्छाओं के निरोध का नाम है।

५-६. विविक्त शय्यासन और कायक्लेश – निर्दोष एकान्त स्थान में प्रमादरहित सोने-बैठने की वृत्ति, विविक्त शय्यासन तथा आत्मसाधना एवं आत्माराधना में होनेवाले, शारीरिक कष्टों की परवाह नहीं करना, **कायक्लेश तप** है।

इनमें ध्यान रखने की बात यह है कि **काय को क्लेश देना तप नहीं है, वरन् कायक्लेश के कारण आत्माराधना में शिथिल नहीं होना, मुख्य बात है।**

(ख) अंतरंग तप

अंतरंग तपों के संदर्भ में भी पण्डित टोडरमलजी का मार्गदर्शन इसप्रकार है –

''तथा अंतरंग तपों में प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, त्याग (व्युत्सर्ग) और ध्यानरूप जो क्रियाएँ, उनमें बाह्य प्रवर्तन; उसे तो बाह्य तपवत् ही जानना। जैसे अनशनादि बाह्य क्रिया हैं, उसीप्रकार यह भी बाह्य क्रिया है; इसलिए प्रायश्चित्तादि बाह्य साधन अंतरंग तप नहीं हैं। **ऐसा बाह्य प्रवर्तन होने पर जो अंतरंग परिणामों की शुद्धता हो, उसका नाम अंतरंग तप जानना।**[१]''

अंतरंग तपों के भेद-प्रभेद

यहाँ एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि **अनशनादि बहिरंग तपों के तो कोई भेद नहीं किये गये पर प्रायश्चित्त, विनय आदि अंतरंग तपों के भेद बताये गये हैं;** जो इसप्रकार हैं –

नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ।।२१।।

ध्यान नामक तप के पहले-पहले प्रायश्चित्त के नौ भेद, विनय के चार भेद, वैयावृत्त्य के दस भेद, स्वाध्याय के पाँच भेद और व्युत्सर्ग (त्याग) के दो भेद होते हैं।

यहाँ जो अंतरंग तपों के भेद किये हैं; उनमें ध्यान तप को छोड़ दिया गया है; क्योंकि **ध्यान तप की चर्चा आगे पृथक् से विस्तार से करनेवाले हैं।**

इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए सूत्र में ही कह दिया है कि **प्राग्ध्यानात् –** यह भेद ध्यान तप के पहले तक ही है।।२१।।

प्रायश्चित्त तप

प्रमाद व अज्ञान से लगे दोषों की शुद्धि के लिए आत्म-आलोचना और प्रतिक्रमणादि द्वारा प्रायश्चित्त करना, **प्रायश्चित्त तप** है।

यह प्रायश्चित्त नामक अंतरंग तप नौ प्रकार का है, जो इसप्रकार है–

आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेद परिहारोपस्थापनाः ।।२२।।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ २३२

१. आलोचना, २. प्रतिक्रमण, ३. तदुभय, ४. विवेक, ५. व्युत्सर्ग, ६. तप, ७. छेद, ८. परिहार और ९. उपस्थापना – ये नौ भेद प्रायश्चित्त नामक तप के हैं।

१. आलोचना – गुरु से अपने प्रमाद को निवेदन करने का नाम, आलोचना नामक प्रायिश्चत्त है।

२. प्रतिक्रमण – 'मेरा दोष मिथ्या हो' – ऐसा निवेदन करना, प्रतिक्रमण नामक प्रायश्चित्त है।

३. तदुभय – कोई अपराध तो अकेली आलोचना से शुद्ध हो जाता है और कोई अपराध केवल प्रतिक्रमण से शुद्ध हो जाता है; किन्तु कोई अपराध आलोचना और प्रतिक्रमण – दोनों से ही शुद्ध होता है; इसे **तदुभय** नामक प्रायश्चित्त कहते हैं।

४. विवेक – सदोष आहार तथा उपकरणों का संसर्ग होने पर उसका त्याग कर देना, विवेक नामक प्रायश्चित्त है।

५. व्युत्सर्ग – कुछ समय के लिए कायोत्सर्ग करना; मन, वचन, काय के प्रति ममत्व छोड़ना, व्युत्सर्ग नामक प्रायश्चित्त है।

६. तप – अनशनादि तपों का करना, तप नामक प्रायश्चित्त है।

७. छेद – दिन, पक्ष, माह, वर्ष आदि के लिए दीक्षा का छेद कर देना, छेद नामक प्रायश्चित्त है।

८. परिहार – कुछ समय के लिए संघ से निकाल देना, परिहार नामक प्रायश्चित्त है।

९. उपस्थापना – पुरानी दीक्षा को छेद कर नवीन दीक्षा देना, उपस्थापना नामक प्रायश्चित्त है।।२२।।

विनय तप

प्रायश्चित्त की चर्चा के उपरान्त अब विनय तप की बात करते हैं –

ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ।।२३।।

ज्ञान विनय, दर्शन विनय, चारित्र विनय और उपचार विनय – इसप्रकार

यह चार प्रकार का विनय तप है।

ज्ञानविनय निश्चयविनय है और ज्ञानी की विनय उपचारविनय है। दर्शनविनय निश्चयविनय है और सम्यग्दृष्टि की विनय उपचारविनय है। चारित्र की विनय निश्चयविनय है और चारित्रवंतों की विनय उपचार-विनय है। इसप्रकार ज्ञान-दर्शन-चारित्र की विनय निश्चयविनय और इनके धारक देव-गुरुओं की विनय उपचारविनय है।

विनयतप तपधर्म का भेद है, अत: इसका उपचार भी धर्मात्माओं में ही किया जा सकता है; लौकिकजनों में नहीं, माता-पिता आदि में भी नहीं।

बिना विचारे जहाँ-तहाँ नमने का नाम विनयतप नहीं है, वैनयिक मिथ्यात्व है। विनय अपने-आप में अत्यन्त महान आत्मिक दशा है। सही जगह विनय होने पर जहाँ वह तप का रूप धारण कर लेती है, वहीं गलत जगह की गई विनय अनन्त संसार का कारण बनती है।

विनय सबसे बड़ा धर्म, सबसे बड़ा पुण्य एवं सबसे बड़ा पाप भी है। विनय तप के रूप में सबसे बड़ा धर्म, सोलहकारण भावनाओं में विनयसम्पन्नता के रूप में तीर्थंकर प्रकृति के बंध का कारण होने से सबसे बड़ा पुण्य और विनय मिथ्यात्व के रूप में अनन्त संसार का कारण होने से सबसे बड़ा पाप है।

विनय के प्रयोग में अत्यन्त सावधानी आवश्यक है। कहीं ऐसा न हो कि आप जिसे विनयतप समझकर कर रहे हों, वह विनयमिथ्यात्व हो। इसका ध्यान रखिये कि **कहीं आप विनयतप या विनयसम्पन्नता भावना के नाम पर विनयमिथ्यात्व का पोषण कर अनंतसंसार तो नहीं बढ़ा रहे हैं ?॥२३॥** **(क्रमश:)**

(पृष्ठ 26 का शेष ...)

(6) जसवंतनगर (उ.प्र.) में दिनांक 28 मार्च से 4 अप्रैल तक सिद्धचक्रमंडल विधान आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री एवं मुख्य प्रवचनकार के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर पधार रहे हैं।

(7) द्रोणगिरि (म.प्र.) तीर्थधाम सिद्धायतन में दिनांक 9 से 11 अप्रैल तक भक्तामर विधान एवं धार्मिक गाथा निलय (नवनिर्मित अतिथिगृह) का लोकार्पण होगा।

सभी साधर्मीजन शिविरों एवं कार्यक्रम में पधारकर अवश्य लाभ लें।

छहढाला प्रवचन

मोक्ष का एकमात्र उपाय भेदज्ञान

जे पूरब शिव गये, जाहिं अरु आगे जैहैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं।।
विषय चाह दव दाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घनाघन बुझावै।।८।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अरे ! आत्मा की महिमा जिसके ज्ञान में न आवे और राग की महिमा आवे, वह जीव वीतरागी मोक्षमार्ग को कैसे साध सकता है ? आत्मा के असीम चैतन्य स्वभाव के सामने रागादि विभावों की कोई महिमा नहीं, वे तो चैतन्य स्वभाव से विपरीत हैं, चैतन्य भाव में राग भाव की तो नास्ति है। स्वभाव का निर्णय किये बिना सम्यक् ज्ञान नहीं हो सकता, सम्यग्ज्ञान बिना मोक्षमार्ग नहीं होता और विषय-कषायरूप अग्नि नहीं बुझती। इसप्रकार सम्यग्ज्ञान मोक्ष का कारण है। सम्यग्ज्ञान को मोक्ष का कारण कहने पर उसके साथ सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र भी आ जाता है – ऐसा समझना चाहिए।

स्वयंभूरमण समुद्र में असंख्य पशु भी ऐसे आत्मा का अनुभव करके मोक्षमार्गी होकर आज भी विचरण कर रहे हैं। हम पुण्य-पाप से पार चैतन्यस्वभावी हैं, यह शरीर हमारा नहीं, मात्र शान्त चैतन्य रस ही हम हैं – इसप्रकार स्वभाव रस का वेदन उन पशुओं को वर्तता है। हे भव्य ! ऐसा मनुष्य अवतार पाकर भी तू मोक्ष के लिए आत्मा का सम्यग्ज्ञान कर। यह तेरे से हो सकता है। पशु पर्याय में जीवों ने जो कार्य किया, वह मनुष्य पर्याय में तुझसे क्यों नहीं हो सकता ? क्या आत्मा पशु या मनुष्य है? आत्मा तो सभी चैतन्य स्वरूपी भगवान जैसे हैं। जो कार्य भगवान ने किया वह क्या तुझसे नहीं हो सकता ? क्यों नहीं हो सकता, अवश्य हो सकता है, अत: उत्साहपूर्वक वह कार्य कर।

मैं ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा हूँ, रागादि विकारी भाव चैतन्य से भिन्न हैं, शरीरादि जड़ अत्यन्त भिन्न हैं – ऐसा जिसको भान नहीं और मैं मनुष्य हूँ – इत्यादि प्रकार से जो अपने को शरीररूप व जड़रूप मानता है, ऐसे जड़ बुद्धि वाले को मोक्षमार्ग का ज्ञान कहाँ से होगा ? वह तो कर्म से बँधता है। जिस समय राग होता है, उस समय उससे भिन्न चैतन्यवस्तु को ही ज्ञानी निजरूप से अनुभव करता है, इसलिए उसी को राग के अभावरूप संवर है और उसी को मोक्षमार्ग है।

अरे भाई ! पुण्य और पाप दोनों चैतन्य से भिन्न हैं, अत: पुण्य-पाप के फल में हर्ष-विषाद मत करो – ऐसा अगले छन्द में कहेंगे। पुण्य के फल में हर्ष करके प्रफुल्लित मत हो जाओ और पाप के फल में विषाद करके मुरझा मत जाओ। चैतन्य को तो पुण्य-पाप दोनों से भिन्न जानकर समभाव रूप रहो। मुनिवर कहते हैं कि पुण्य-पाप मुक्ति का उपाय नहीं है, पुण्य-पाप से भिन्न ऐसा सम्यग्ज्ञान ही मुक्ति का उपाय है, उसे करोड़ों उपाय करके अन्तर में प्रकट करो।

सम्यग्ज्ञान समान महिमावन्त वस्तु जगत में अन्य है ही नहीं। ''ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण।'' जीव को ज्ञान जैसा सुखदायक जगत में अन्य कोई नहीं है। अरे ! तेरा ज्ञान परम सुख की प्राप्ति करानेवाला और दु:ख-दावानल को बुझानेवाला है, उसकी परम महिमा लाकर, तू आत्मा में एकाग्रता करके वह ज्ञान प्रकटकर, ज्ञान को राग में एकाग्र मत कर। अन्तर में ज्ञान और राग की भिन्नता का भावभासन करके ज्ञान का स्वाद ले। भिन्नता का भावभासन हुए बिना अर्थात् ज्ञान का स्वाद आये बिना अकेला शास्त्र-पठन आदि बाह्य प्रयत्न किस काम का ? मैं चैतन्य तत्त्व हूँ और राग से मेरा तत्त्व भिन्न जाति का है – ऐसा अन्तर में वेदन करे तब शास्त्र के भावों का सच्चा भासन होता है और सम्यग्ज्ञान होता है।

ऐसे सम्यग्ज्ञान होने पर आत्मा में चैतन्य के शान्त रस की ऐसी मेघ वर्षा होगी कि अनादि के विषय-कषाय की भयंकर आग क्षणमात्र में बुझ जायेगी। ज्ञान होते ही कषायों से आत्मा भिन्न पड़ गया और चैतन्य के परम शान्त रस में मग्न हो गया। पश्चात् जो अल्प राग रह गया वह तो ज्ञान से भिन्नपने ही रहा है – एकपने नहीं रहा। कषाय के किसी अंश को धर्मी जीव अपने ज्ञान में नहीं मिलाता। ऐसा अपूर्व

ज्ञान परम महिमावंत है – ऐसा मुनिनाथ भगवान ने कहा है।

जैसे शीतल बर्फ और उष्ण अग्नि - इन दोनों का स्पर्श भिन्न-भिन्न जाति का है, वैसे ही शान्त रसरूप ज्ञान और आकुलतारूप राग - इन दोनों का स्वाद अत्यन्त भिन्न जाति का है और उस ज्ञान के द्वारा पहिचाना जाता है। राग से भिन्न जो शुभाशुभ इन्द्रिय विषय (स्त्री आदि अशुभ और समवशरण आदि शुभ) हैं, उनमें मेरे सुख का अंश भी नहीं है, उनमें परम सुख मानना मिथ्यात्व है। जहाँ सुख धरा है, ऐसे स्व-विषय को भूलकर, पर विषय में सुख बुद्धि के कारण मिथ्यादृष्टि जीव विषय-कषाय की भयंकर आग में निरंतर जल रहा है, दु:खी हो रहा है। हे जीव ! अपने को दु:ख से बचाने के लिए तू शीघ्र ही विषयों से भिन्न अपने चैतन्य अमृत के समुद्र को देख। तेरा सगा भाई या बहिन अग्नि में जलती हो तो उसे बचाने के लिए सभी काम एक तरफ छोड़कर कितनी शीघ्रता करता है ? तो यहाँ सगे से सगा ऐसा अपना आत्मा भयंकर भवदु:ख की अग्नि में जल रहा है। हे जीव ! उसे बचाने के लिए तू अत्यन्त शीघ्रता कर और सम्यग्ज्ञान कर।

सम्यग्ज्ञान होने पर शान्त रस के वेदन से तेरा ज्ञान विषयों से विरक्त हो जावेगा। बाहर के विषयों में, शरीर इन्द्रियादि में, कहीं स्वप्न में भी मेरे आनन्द की गंध भी नहीं है और मेरे आत्मा में कोई अचिन्त्य विषयातीत सुख है। आनन्द का अगाध सागर मेरे में भरा है – इसप्रकार सम्यग्ज्ञान से स्व-पर का भेद जानने पर आत्मा सब विषयों में विरक्त हो जाता है और आत्मा में ही सुख बुद्धि होने से उसमें एकाग्र हो जाता है। फिर भला उस ज्ञान में अशान्ति कैसे रहे ? इसप्रकार सम्यग्ज्ञान ही संसार के भयंकर दावानल से बचाने का एकमात्र उपाय है। इसलिए ऐसे सम्यग्ज्ञान की मुनिवरों ने भी बहुत प्रशंसा की है। इसलिए सुख के अर्थ तू अवश्य उसका सेवन कर। **(क्रमश:)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन –

अरहंत भगवान का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 71वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

घणघाइकम्मरहिया केवलणाणाइपरमगुणसहिया।
चोत्तिस अदिसयजुत्ता अरिहंता एरिसा होंति।।७१।।

(हरिगीत)

अरिहंत केवलज्ञान आदि गुणों से संयुक्त हैं।
घनघाति कर्मों से रहित चौतीस अतिशय युक्त हैं।।७१।।

घनघातिकर्म रहित, केवलज्ञानादि परम गुणों सहित और चौंतीस अतिशय संयुक्त – ऐसे अर्हन्त भगवान होते हैं।

(गतांक से आगे....)

(मालिनी)

जयति विदितगात्र: स्मेरनीरेजनेत्र:
सुकृतनिलयगोत्र: पण्डिताम्भोजमित्र:।
मुनिजनवनचैत्र: कर्मवाहिन्यमित्र:
सकलहितचरित्र: श्रीसुसीमासुपुत्र:।।९६।।

(हरिगीत)

विकसित कमलवत नेत्र पुण्य निवास जिनका गोत्र है।
हैं पण्डिताम्बुज सूर्य मुनिजन विपिन चैत्र वसंत हैं।।
जो कर्मसेना शत्रु जिनका सर्वहितकर चरित है।
वे सुत सुसीमा पद्मप्रभजिन विदित तन सर्वत्र हैं।। ९६।।

इस नियमसारशास्त्र के टीकाकार पद्मप्रभमलधारिदेव निर्ग्रन्थ मुनि थे। छठे-सातवें गुणस्थान में आनन्दकन्द स्वभाव में झूलते थे। उनका नाम पद्मप्रभ था, अत: इस अरहन्त भगवान की गाथा में उनके नाम पर ही जिनका नाम था – ऐसे

छठे पद्मप्रभ तीर्थंकर भगवान की पाँच श्लोकों द्वारा यहाँ स्तुति करते हैं।

कैसे हैं पद्मप्रभ भगवान? प्रख्यात अर्थात् परमौदारिक जिनका शरीर है। त्रिलोकीनाथ भगवान के शरीर के रजकण स्फटिक जैसे उज्ज्वल होते हैं। भगवान के शरीर के पास कोई पात्र जीव आवे तो अपने सात भव देख लेता है। केवलज्ञानी तीर्थंकर भगवान आहार नहीं लेते, मल-मूत्र निस्सरण नहीं करते, उनके रोग भी नहीं होता। सामान्य जीव के शरीरों के रजकणों की अपेक्षा भगवान के शरीर के रजकण बदल जाते हैं, उसे परमौदारिक शरीर कहते हैं। केवलज्ञान होने पर भगवान का वह परमौदारिक शरीर ५,००० धनुष ऊँचा आकाश में उठ जाता है। सामान्य मनुष्य के समान भगवान जमीन के ऊपर नहीं चलते।

पुन: कैसे हैं भगवान? प्रफुल्लित कमल जैसे उनके नेत्र हैं। यह पुण्य का वर्णन है, उससे आत्मा को लाभ-हानि नहीं है। त्रिलोकीनाथ सर्वज्ञ भगवान दूसरे पण्डितरूपी कमलों को विकसित करने के लिए सूर्य हैं; विकसित होनेरूप योग्यता तो सामने वाले जीव की है, उसमें भगवान निमित्त हैं। सूर्य भी कमल को खिलाने में निमित्त ही है, किन्तु उसको खिलाता नहीं है। यदि वह खिलाता हो तो पाषाणकमल को भी खिलावे न? – पाषाणकमल में खिलने की योग्यता नहीं है, जबकि कमल में खिलने की योग्यता है। पण्डित-मुनिकमल को केवलज्ञानपने खिलाने में भगवान सूर्य निमित्त हैं। जिसे आत्मा का भान है कि **'शरीर, वाणी से मैं भिन्न हूँ, शरीर मेरा स्वरूप नहीं है'** – ऐसे ज्ञानी को खिलाने में भगवान निमित्त हैं; किन्तु अज्ञानी को जो स्वयं नहीं खिलता उसे खिलाने में भगवान निमित्त नहीं हैं।

नग्न मुनिवर कि जो आत्मध्यान में लीन हैं, जिन्हें समय-समय निजचैतन्यबिम्ब देह और विकार से भिन्न प्रतिभासित होता है। ऐसे हजारों बार छठे-सातवें गुणस्थान में झूलते मुनिजनरूपी वन को विकसित करने के लिए अरहन्तदेव चैत्र अर्थात् बसन्तऋतु समान हैं। जिन वृक्षों में पुष्पित होने की योग्यता है, उन्हीं को चैत्रमास बसन्त के रूप में फलित होता है अर्थात् उनके पुष्पित होने में निमित्त होता है। उसीप्रकार जिस मुनि के अन्दर स्वभाव का विकास हुआ है उसको भगवान वसन्तुऋतु समान हैं।

पुनश्च, भगवान कर्म की सेना के शत्रु हैं। भगवान ने चार घातिया कर्मों को नाश कर दिया है – यह निमित्त का कथन है। भगवान ने स्वभाव में श्रद्धा-ज्ञान

सहित सम्पूर्ण लीनता द्वारा भावघातिकर्म को – विकारीभाव को नाश किया अर्थात् निमित्त से द्रव्यघातिकर्म को नाश किया – ऐसा कहा गया।

ऐसे अरहन्तरूप में श्री सीमंधर भगवान वर्तमान में महाविदेहक्षेत्र में विराजमान हैं। यहाँ भरतक्षेत्र के बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ के समय में उनको केवलज्ञान अरहन्तपद प्रकट हुआ था और भविष्य की चौबीसी के छठे-सातवें तीर्थंकर के समय में वे मोक्ष पधारेंगे। सीमंधर भगवान की चौरासी लाख पूर्व की आयु है।

अरहन्त भगवान का चरित्र अर्थात् दशा सर्व को हितरूप है। उनके शरीर के निमित्त से किसी जीव का घात नहीं होता। ऐसे श्री सुसीमा माता के सुपुत्र श्री पद्मप्रभ भगवान जयवन्त वर्तते हैं। वे इस समय मोक्ष में हैं। पद्मप्रभ मुनिराज उनकी वर्तमान में तीर्थंकररूप कल्पना करके स्तुति करते हैं। 'शरीर की क्रिया का अथवा विकल्प का कर्त्ता मैं नहीं हूँ, मैं तो चैतन्य ज्ञानानन्द भगवान हूँ' इसप्रकार मुनिराज अपने चैतन्य को उछालते हुए पूर्व का आरोपण करके भगवान का वर्तमान तीर्थंकरपने वर्णन करते हैं। ऐसे भगवान का स्वरूप समझे तो समझनेवाले और समझानेवाले मुनि का सामंजस्य समझा जाय।

(मालिनी)

स्मरकरिमृगराजः पुण्यकंजाह्निराजः
सकलगुणसमाजः सर्वकल्पावनीजः।
स जयति जिनराजः प्रास्तदुःकर्मबीजः
पदनुतसुरराजस्त्यक्तसंसारभूजः ।।९७।।

(हरिगीत)

जो गुणों के समुदाय एवं पुण्य कमलों के रवि।
कामना के कल्पतरु अर कामगज को केशरी।।
देवेन्द्र जिनको नमें वे जयवन्त श्री जिनराजजी।
हे कर्मतरु के बीजनाशक तजा भव तरु आपने।। ९७।।

टीकाकार मुनिराज का नाम पद्मप्रभ है, इसलिए उन्होंने अपने नाम के ही नामवाले श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर की स्तुति की है।

कैसे हैं पद्मप्रभ तीर्थंकर भगवान? पद्मप्रभ भगवान कामदेवरूपी हाथी को मारने के लिए सिंह हैं। भगवान के समान यह आत्मा भी विषयवासनारूपी हाथी

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष
के अवसर पर शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में

समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

दिनांक 9 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2016 तक

- 1008 इन्द्रों द्वारा समयसार विधान का विशाल आयोजन।
- देश के प्रमुख विद्वानों का प्रवचन, कक्षा एवं गोष्ठियों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ।
- टोडरमल महाविद्यालय के 800 से भी अधिक भूतपूर्व एवं 185 वर्तमान स्नातक विद्वानों का ऐतिहासिक महासम्मेलन।
- प्रथम सभा के इन्द्र हेतु 2 लाख 51 हजार रुपये, द्वितीय सभा के इन्द्र 1 लाख, तृतीय सभा के इन्द्र 51 हजार, चतुर्थ सभा के इन्द्र 21 हजार, पंचम सभा के इन्द्र 11 हजार की राशि देकर अपना स्थान शीघ्र बुक करावें।
- स्नातक परिषद् के विद्वानों को 50% की विशेष छूट।
- विधान में बैठने वाले इन्द्रों को उनकी श्रेणी के योग्य आवास एवं भोजन की नि:शुल्क, तथा अन्य शिविरार्थियों को सशुल्क आवास एवं नि:शुल्क भोजन की व्यवस्था।
- स्थान सीमित है, अत: 'पहले आओ पहले पाओ' के आधार से आरक्षण किया जावेगा; अत: शीघ्रता करें।

संपर्क –
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन नं.0141-2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष 1967-2017

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में वर्षभर तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार से संबंधित अनेक योजनायें संचालित की जावेंगी, जिसमें मुख्य कार्यक्रम निम्नानुसार हैं -

1. शाश्वत तीर्थधाम सम्मेद शिखर में आगामी 9 से 14 अक्टूबर तक 1008 इन्द्रों द्वारा समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का विशाल आयोजन किया जावेगा। इस अवसर पर स्नातक परिषद्, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं अ.भा. दि.जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी आयोजित किये जावेंगे।

   नोट :- शिखरजी में होने वाले समयसार विधान एवं शिविर के लिये आवास व्यवस्था संबंधी विस्तृत रूपरेखा आगामी अंक में प्रकाशित की जावेगी।
2. ग्रीष्मकाल के अवसर पर देशभर में बालसंस्कार शिविरों, आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों, ग्रुप शिविरों और युवा शिविरों का आयोजन किया जावेगा।
3. वर्षभर देश के अनेक स्थानों पर समयसार विधान का आयोजन किया जावेगा।
4. देशभर में स्वाध्याय सभाओं और व्यक्तिगत स्वाध्याय हेतु मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जावेगा, जिसके अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ का स्वाध्याय किया जावेगा। इसके लिये अध्ययन सामग्री, प्रश्न-पत्र केन्द्र द्वारा उपलब्ध कराई जावेगी, इसकी विस्तृत रूपरेखा अगले अंक में प्रकाशित की जावेगी।
5. आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा विशेष रूप से प्रतिपादित क्रमबद्धपर्याय, पुण्य-पाप, सम्यग्दर्शन, षट्कारक, निमित्त-उपादान, वस्तुस्वातंत्र्य, द्रव्य-गुण-पर्याय, सर्वज्ञता आदि महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर देशभर में विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जावेगा।
6. युवा पीढी को तत्त्वज्ञान से परिचित कराने हेतु अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम बनाकर, उसे पढाने वाले अध्यापकों को तैयार किया जावेगा।
7. गाँव-गाँव में पत्राचार द्वारा जैनदर्शन की पढाई (सिद्धांत विशारद डिग्री) हेतु लोगों को प्रेरितकर टोडरमल मुक्तविद्यापीठ का संचालन करना।
8. दशलक्षण पर्व के अवसर पर गाँव-गाँव में स्वर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन।
9. नवीन साहित्य का प्रकाशन, पाठशालाओं का संचालन एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन की शाखाओं का पुर्नगठन किया जावेगा
10. तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु और भी अनेक प्रकार की योजनाओं को बनाकर उनका तात्कालिक व स्थायी रूप से संचालन करना।
11. फरवरी 2017 में जयपुर में भव्य समापन समारोह।

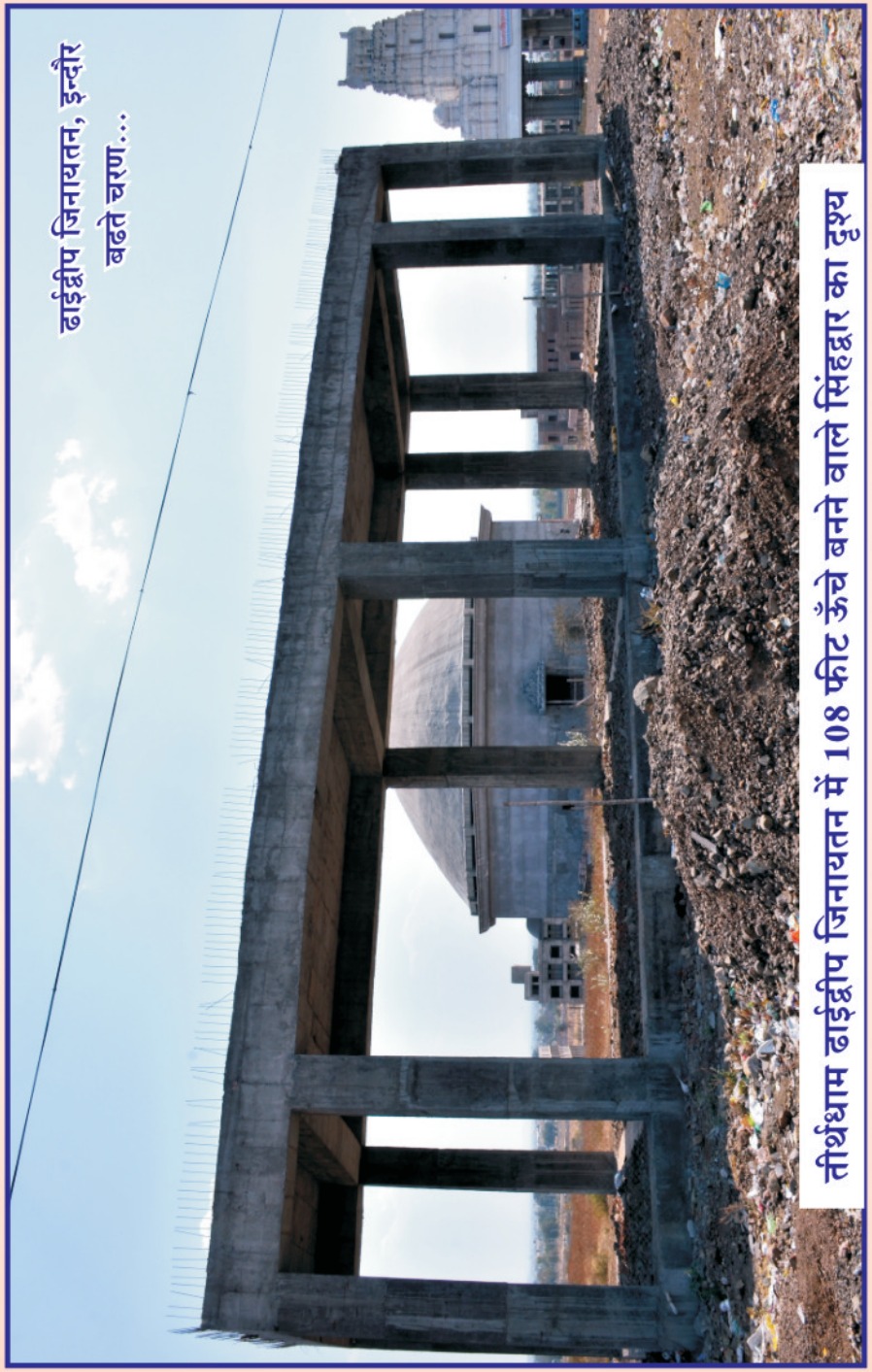

ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर
बढते चरण...

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में 108 फीट ऊँचे बनने वाले सिंहद्वार का दृश्य

ढाईद्वीप जिनायतन में बने हुये 72 फीट ऊँचे सिंहद्वार का दृश्य (सहयोगदाता-रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल, पूना)

को मारने के लिए (विषयवासना टालने के लिए) सिंह है। आत्मा ज्ञाता-दृष्टा है, चिदानन्द अमृत का सागर है – ऐसा भगवान ने प्रथम भान करके, स्वरूप में लीन होकर, काम का – विकल्प का एक अंश भी रहने नहीं दिया। जो जीव ऐसा भान करके स्वरूप में स्थिर होवे वह भी काम का – इच्छा का नाश कर सकता है।

भगवान पुण्यरूपी कमल को विकसित करने के लिए भानु हैं। जो भव्यजीव आत्मा की समझसहित भगवान की स्तुति करते हैं, उनके पुण्यभावरूपी कमल को खिलाने के लिए भगवान सूर्य हैं – निमित्त हैं। आत्मा ज्ञानानन्द चैतन्यमूर्ति भगवान है; वह पर से, पर की क्रिया से, तथा पर के लक्ष्य से होनेवाले पुण्य-पापरूप विकारीभाव से भिन्न हैं। ऐसे आत्मा का भान करके सम्पूर्ण भावमुक्ति को प्राप्त अरहन्त भगवान की जो जीव स्तुति-भक्ति करता है, वह अनुक्रम से संसाररहित तो होता ही है; किन्तु वर्तमान पुण्य भी विशेष उच्च बाँधता है और उसके फलस्वरूप इन्द्र, चक्रवर्ती अथवा तीर्थंकरादि होता है। यद्यपि धर्मी जीव को पुण्य की इच्छा होती नहीं, पुण्य का आदर नहीं होता, तथापि निम्न भूमिका में सहज भक्ति आदि का विकल्प आ जाता है और उसके निमित्त से उच्च पुण्य बंध जाता है। **(क्रमशः)**

यह ग्रीष्मकाल : पाठशाला के नाम

क्या आप चाहते हैं आपके नन्हे-मुन्ने बालक

- सदाचारी हों
- संस्कारी हों
- जैनतत्त्वज्ञान से परिचित हों

यदि हाँ तो इस ग्रीष्म अवकाश के अवसर पर अपने मंदिर/गाँव/मौहल्ले में

बाल शिविर लगायें

इसके लिये आपको क्या करना होगा ?

- आप यह निर्णय करें कि आपको 5-7 या 10 दिन या कितने दिन का शिविर अपने गाँव में लगाना है ? शिविर की तारीख अपनी सुविधानुसार तय कर हमें विद्वान भेजने हेतु आमंत्रण भेजें।

हम आपकी आवश्यकतानुसार पाठशाला में पढाने हेतु 1-2 या 3 विद्वान, अध्यापक उपलब्ध करायेंगे।

- आपको आने वाले विद्वानों के सुविधाजनक आवास, भोजन, आवागमन व्यय की समुचित व्यवस्था मात्र करनी है।

अपने आमंत्रण पत्र शीघ्र भेजें। संपर्क :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : द्रव्यार्थिकनय द्रव्य को मुख्य करके जानता है; यहाँ द्रव्य का क्या अर्थ है?

उत्तर: द्रव्य और पर्याय को मिलाकर द्रव्य नहीं कहें अर्थात् गुण-पर्याय का पिण्ड वह द्रव्य - यह अपेक्षा यहाँ नहीं है। यहाँ तो वर्तमान अंश को गौण करके त्रिकाल द्रव्य शक्ति, वह द्रव्य है; स्वभाव सामान्य है और वर्तमान अंश विशेष है, पर्याय है। इन दोनों को मिलाकर जो सम्पूर्ण द्रव्य है, वह प्रमाण का विषय है और उसमें से सामान्य स्वभाव द्रव्यार्थिकनय का विषय है तथा विशेष पर्यायार्थिकनय का विषय है। द्रव्यार्थिक नय की दृष्टि में पर्याय गौण है अर्थात् इस नय की दृष्टि में सिद्धदशा प्रगट हुई – यह बात नहीं आती; त्रिकालशुद्ध ज्ञानस्वभाव ही द्रव्यदृष्टि का विषय है और उसके ही आश्रय से निर्मल पर्याय प्रगट होती है। द्रव्य का विश्वास करने से ही पर्याय में निर्मल कार्य होता है – ऐसा स्वभाव है।

प्रश्न: द्रव्यनय और द्रव्यार्थिकनय के विषय में क्या अन्तर है?

उत्तर: द्रव्यनय का विषय तो एक ही धर्म है। समयसारादि में द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक – ऐसे दो ही मुख्यनय लिए हैं; उनमें जो द्रव्यार्थिकनय है, उसका विषय अभेद द्रव्य है। द्रव्यनय तो वस्तु में भेद करके उसके एक धर्म को लक्ष्य में लेता है; जबकि द्रव्यार्थिकनय भेद किये बिना वर्तमान पर्याय को गौण करके अभेद द्रव्य को लक्ष्य में लेता है – इसप्रकार इन दोनों के विषय में बहुत अन्तर है। समयसार में कथित शुद्धनिश्चयनय का जो विषय है, वह द्रव्यनय का विषय नहीं है; उस निश्चय/द्रव्यार्थिक नय का विषय तो वर्तमान अंश को तथा भेद को गौण करके सम्पूर्ण अनन्तगुणों का पिण्ड है; जबकि द्रव्यनय तो अनन्त धर्मों में से एक को भेद करके विषय करता है।

प्रश्न : श्रुतज्ञान में ही नय क्यों होते हैं, अन्य ज्ञानों में नय क्यों नहीं होते ?

उत्तर : मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान और केवलज्ञान – इन पाँच प्रकार के ज्ञानों में अवधि-मन:पर्यय और केवलज्ञान तो प्रत्यक्ष है तथा मति-श्रुत ज्ञान परोक्ष है। नय परोक्षज्ञान है। प्रत्यक्षज्ञान का अंश तो प्रत्यक्ष ही होता है;

अत: उसमें नय नहीं होते। केवलज्ञान पूर्ण स्पष्ट प्रत्यक्ष है तथा अवधि और मन:पर्ययज्ञान भी अपने-अपने विषय में प्रत्यक्ष है; अत: इन तीनों प्रत्यक्ष ज्ञानों में तो परोक्षरूप नय नहीं होते। मतिज्ञान यद्यपि परोक्ष है; किन्तु उसका विषय अल्प है, वह मात्र वर्तमान पदार्थ को ही प्रत्यक्ष करता है। सर्वक्षेत्र व सर्वकालवर्ती पदार्थों को वह ग्रहण नहीं करता; इसलिये उसमें नय नहीं होते, क्योंकि जो सम्पूर्ण पदार्थ के ज्ञानपूर्वक उसमें भेद करके जानें, उसे नय कहते है।

श्रुतज्ञान अपने विषयभूत समस्त क्षेत्र-कालवर्ती पदार्थों को परोक्षरूप से ग्रहण करता है, इसलिये उसमें ही नय पडते हैं। श्रुतज्ञान में भी जितना स्व-संवेद्य प्रत्यक्ष हो गया है, उतना तो प्रमाण ही है और जितना परोक्षपणा रह गया है, उसमें नयविभाग होता है। श्रुतज्ञान सर्वथा परोक्ष ही नहीं है, स्व-संवेदन में वह आंशिक प्रत्यक्ष भी है। ऐसे स्व-संवेदन पूर्वक ही सच्चे नय होते हैं। श्रुतज्ञान केवलज्ञान के समान सकल पदार्थों को भले ही न जाने; किन्तु अपने विषय के योग्य पदार्थों को सकल काल-क्षेत्र सहित पूरा ग्रहण करता है और उसमें एकदेशरूप नय होते हैं।

प्रश्न : श्रुतज्ञान त्रिकाली पदार्थों को परोक्ष जानता है, इसलिये नय उसमें ही होते है – ऐसा कहा है; क्या इसमें कोई रहस्य है ?

उत्तर : हाँ ! रहस्य है और सूक्ष्म रहस्य है। इसमें से ऐसा न्याय निकलता है कि द्रव्यार्थिक नय मुख्य है और पर्यायार्थिक नय गौण है। त्रिकालीपदार्थ का ज्ञान हो, तभी उसके अंश के ज्ञान को पर्यायार्थिक कहा जाता है। जब द्रव्यार्थिकनय से त्रिकाली द्रव्य को जाना, तब उसके पर्यायरूप अंश को जाननेवाले ज्ञान को पर्यायार्थिक नय कहा जाता है। त्रिकाली द्रव्य के सन्मुख होकर उसको जाना, तभी उसके अंश के ज्ञान को व्यवहारनय कहा गया। त्रिकाली के ज्ञान बिना अंश का ज्ञानरूप व्यवहार नहीं होता।

इसप्रकार यह बात सुनिश्चित हुई कि निश्चय बिना व्यवहार नहीं और द्रव्य के ज्ञान बिना व्यवहार नहीं। व्यवहारनय तो अंश को जानता है; किन्तु अंश किसका ? त्रिकाली पदार्थ का; अत: त्रिकाली पदार्थ के बिना उसके अंश का ज्ञान यथार्थ नहीं होता। श्रुतज्ञान भी त्रिकाली द्रव्य की तरफ झुके, तो उसमें नय होते हैं। त्रिकाली के ज्ञान बिना मात्र पर्याय या भेद को जाना जाय तो वहाँ पर्यायबुद्धि का एकान्त हो जाता है, मिथ्यात्व हो जाता है, उसमें नय नहीं होते। आत्मा नित्य है, शुद्ध ज्ञानघन है – ऐसा जाननेवाला नय त्रिकाली पदार्थ के ज्ञान बिना नहीं होता तथा शुद्धता, नित्यता आदि को जाने बिना अकेली अशुद्धता, अनित्यता को जाना जाय तो भी एकान्त मिथ्यात्व हो जाता है, वहाँ व्यवहारनय भी नहीं होता।

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर के –

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष का मंगल शुभारंभ

● पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष की मंगलमयी शुरुआत ● अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ ● 200 से अधिक स्नातक विद्वानों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति ● पंचपरमेष्ठी विधान का भव्य आयोजन ● पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा ज्ञानवर्धक कथाओं का आयोजन ● डॉ. गौरव जैन सौगानी द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या का आयोजन ● श्री जिनेन्द्र रथयात्रा का भव्य आयोजन ● वर्षभर चलेंगे कार्यक्रम

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में उनकी प्रेरणा और करकमलों से स्थापित आध्यात्मिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र के रूप में विख्यात पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट अपनी स्थापना के 50 वर्ष मनाने जा रहा है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष एवं चतुर्थ वार्षिक महोत्सव का शुभारंभ 26 फरवरी को प्रात: श्री निहालचंद घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ।

यह आयोजन अनेक मांगलिक आयोजनों सहित संपन्न हुआ। 26 फरवरी को प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान के उपरान्त प्रवचन मंडप का उद्घाटन श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी परिवार जयपुर द्वारा तथा मंच का उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी परिवार भीलवाड़ा द्वारा किया गया। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मेरठ के उत्साही कार्यकर्ता श्री अजयजी जैन, श्री सौरभजी जैन व श्री अंबुजजी जैन ने स्वस्तिक बनाकर समारोह का शुभारंभ किया।

प्रसिद्ध रत्नव्यवसायी एवं दिगम्बर जैन महासमिति के भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विवेकजी काला जयपुर की अध्यक्षता, सुप्रसिद्ध हृदयरोग चिकित्सक डॉ. सुभाषजी काला के मुख्य आतिथ्य में गौरवशाली सभा आयोजित हुई, जिसे संबोधित करते हुये डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने स्मारक की जन्मकथा पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा भवन के निर्माता श्री पूरनचंदजी गोदिका और आजीवन महामंत्री रहे श्री नेमीचंदजी पाटनी को याद करते हुये उनके द्वारा किये गये कार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। श्री विवेकजी काला ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमें अपने जीवन में संयम, तप, त्याग आदि को भी महत्व देना चाहिये तभी जीवन सफल होगा। मंच संचालन का भार कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने बखूबी वहन किया।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन तथा डॉ. भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमार पाटील, डॉ. वीरसागर जैन, डॉ. संजीवकुमार गोधा तथा डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ के प्रवचनों से समाज लाभान्वित हुई। यहाँ स्मरणीय है कि पंचपरमेष्ठी विधान के आमंत्रणकर्त्ता पण्डित सिद्धार्थ कुमार दोशी रतलाम थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजय शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित गोमटेश शास्त्री व महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा संपन्न कराये गये।

महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की छटा

(1) आध्यात्मिक भजन संध्या में झूम उठे श्रद्धालु –

दिनांक 26 फरवरी की रात्रि में श्री गौरव जैन सौगानी, श्रीमती दीपशिखा जैन एवं श्रीमती नेहा जैन चांदवाड द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर स्वर कोकिला श्रीमती कनकप्रभा हाडा द्वारा प्रस्तुत भजनों से सभा में आह्लाद का वातावरण बन गया। अध्यात्म से सराबोर इन भजनों की खूबसूरत प्रस्तुति का सैंकड़ों लोगों ने देररात तक मंत्रमुग्ध होकर लाभ लिया।

(2) भगवान महावीर के पूर्व भवों एवं आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर आधारित कथा –

दिनांक 27 फरवरी की रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा भगवान महावीर के पूर्व भवों की कथा अत्यंत सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रस्तुत की गई।

दिनांक 28 फरवरी की रात्रि में आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर आधारित कथा की अत्यंत आकर्षक प्रस्तुति हुई।

दोनों कथाओं के आयोजन में महाविद्यालय के छात्रों के साथ-साथ उपस्थित जनसमुदाय ने अत्यंत हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया।

धूमधाम से निकली श्रीजी की विशाल शोभायात्रा

वार्षिक महोत्सव के अंतिम दिन 28 फरवरी को प्रात: 9.30 बजे से जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया, जिसके पूर्व आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष उद्घाटन समारोह की विशाल सभा को संबोधित करते हुये मुख्य अतिथि श्री गुलाबचंदजी कटारिया (माननीय गृहमंत्री-राजस्थान सरकार), विशिष्ट अतिथि श्री कालीचरणजी सर्राफ (शिक्षामंत्री-राजस्थान सरकार), श्री विवेकजी काला आदि महानुभावों ने टोडरमल स्मारक एवं इसकी गतिविधियों की प्रशंसा करते हुये अपना उद्बोधन दिया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना ने एवं संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया। अतिथियों का श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल तथा श्री विपिनजी शास्त्री ने माल्यार्पण व श्रीफल भेंटकर स्वागत किया।

इस अवसर पर आयोजित सभा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के अतिरिक्त श्री गुलाबचंदजी कटारिया (माननीय गृहमंत्री - राजस्थान सरकार), श्री कालीचरणजी सर्राफ (माननीय शिक्षामंत्री - राजस्थान सरकार), श्री रामचरणजी बोहरा (सांसद), श्री गौतम दक (विधायक-बड़ी सादड़ी), श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, श्री महेन्द्रकुमाजी पाटनी जयपुर, श्री चंद्रभानजी जैन सिद्धायतन, श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री गुलाबचंदजी जैन सागर, श्री नरेशकुमारजी

सेठी जयपुर, श्री राजेन्द्रजी गोधा जयपुर, जस्टिस नरेन्द्रकुमारजी जैन जयपुर, श्री सुधांशुजी कासलीवाल जयपुर, श्री ताराचंदजी पाटनी जयपुर, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ आदि महानुभावों ने स्वर्ण जयंती ध्वज दिखाकर शोभायात्रा का प्रारंभ किया।

श्री टोडरमल स्मारक भवन से प्रारंभ हुई इस विशाल शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान को लेकर श्री संजयजी कोठारी रथ पर बैठे एवं श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर सारथी के रूप में रथ पर बैठे। इसके अतिरिक्त चार बग्गियों में श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम प्रथमानुयोग, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर करणानुयोग, श्री अजितजी तोतुका जयपुर चरणानुयोग एवं श्री शांतिलालजी जैन जयपुर द्रव्यानुयोग ग्रन्थ लेकर चल रहे थे। महाविद्यालय के सैकड़ों वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातक विद्वान, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर के सभी युवा सदस्यों के साथ-साथ सैकड़ों की संख्या में साधर्मी पुरुष भाई अपने धवल वस्त्रों में केसरिया दुपट्टा डालकर अध्यात्म और भक्ति से सराबोर भजनों पर झूमते हुए चल रहे थे। विशेष रूप से तैयार राजस्थानी पगड़ी को पहनकर चल रहे साधर्मीजनों से शोभायात्रा में चार चाँद लग रहे थे।

शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले सभी जैन परिवारों द्वारा श्रीजी के रथ का स्वागत मंगल स्वस्तिक चिह्न बनाकर, श्रीजी को अर्घ्य समर्पितकर किया गया।

रत्नत्रय मंडल विधान एवं शिविर संपन्न

पौन्नूरमलै (तमिलनाडु.) : आचार्य कुन्दकुन्द की साधनाभूमि पौन्नूरमलै में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 25 फरवरी तक रत्नत्रय मंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार पर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा सात तत्त्व संबंधी भूलों पर एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर विशेष व्याख्यानों का लाभ मिला। प्रतिदिन प्रात:कालीन प्रौढकक्षा के अन्तर्गत ब्र. हेमचंदजी देवलाली, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित सुकुमालजी शास्त्री गुना, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर का लाभ मिला। साथ ही एक दिन 'तत्त्वज्ञान की रुचि बने कैसे व बढे कैसे' विषय पर आयोजित गोष्ठी में पण्डित देवांग शास्त्री मुम्बई, पण्डित अंकुर शास्त्री भोपाल एवं पण्डित सौरभ शास्त्री खड़ैरी ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस कार्यक्रम में 6 प्रांतों से लगभग 200 साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। समापन सभा के अन्तर्गत श्री अनंतराय ए. शेठ ने पौन्नूरमलै पर निर्मित आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर की स्थापना व उद्देश्यों की जानकारी दी।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुये। कार्यक्रम के व्याख्यानों की सी.डी. के लिये 09300642434 पर संपर्क करें।

श्रद्धा और भक्ति के उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ महामस्तकाभिषेक

दिनांक 28 फरवरी को शोभायात्रा के पश्चात् सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया।

सीमंधर भगवान का प्रथम अभिषेक का सौभाग्य श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर ने एवं स्फटिक रत्न की चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा का प्रथम अभिषेक श्री अजितप्रसादजी दिल्ली द्वारा किया गया। पंचतीर्थ जिनालय में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ परिवार द्वारा भगवान महावीर का, श्री अजितप्रसादजी जैन एवं श्री आदीशजी जैन दिल्ली द्वारा भगवान आदिनाथ, श्री प्रदीपजी सोनी आगरावाले जयपुर द्वारा शान्तिनाथ भगवान, श्री हिमांशुजी जैन सुपुत्र श्री महाचंदजी जैन जयपुर द्वारा बाहुबली भगवान एवं श्री शोभितजी काला व नैवेद्यजी काला जयपुर द्वारा पार्श्वनाथ भगवान का सर्वप्रथम अभिषेक किया गया। इसके अतिरिक्त पद्मासन सीमंधर भगवान, युगमन्धर भगवान, बाहु भगवान एवं सुबाहु भगवान का अभिषेक क्रमश: श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर, श्री लक्ष्मीचंदजी सीकरवाले जयपुर, श्री संजयजी कोठारी मुम्बई व श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा किया गया।

चतुर्मुख वासुपूज्य भगवान का प्रथम अभिषेक डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल ने एवं नेमिनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक श्री ध्रुवेशजी शास्त्री एवं ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद द्वारा किया गया।

यह संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में किया गया।

इसप्रकार यह महोत्सव अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी सेक्टर 14 में श्री सुजानमलजी गदिया की भावनानुसार दिनांक 22 से 24 फरवरी तक त्रिकालवर्ती तीर्थंकर जिनालय में पंचमेरु की वेदी प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री उदयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम में 80 परिवारों द्वारा वेदी प्रतिष्ठा की गई। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम व पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के सहयोग से संपन्न हुये।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित ऋषभजी उदयपुर ने किया।

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में दिनाँक 25 फरवरी को सत्र 2015-16 में संपन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं साहित्यिक सप्ताह के विजेताओं व उपविजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही अक्टूबर शिविर की डायरियाँ जमा करने वाले विद्यार्थियों को एवं जिनवाणी सज्जा प्रतियोगिता के अन्तर्गत 250 ग्रंथों को सुरक्षित तरीके से सजाने वाले उपाध्याय कनिष्ठ के 15 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

पण्डित टोडरमल खेलरत्न पुरस्कार अक्षय जैन श्यामनिप्पाणी (शास्त्री प्रथमवर्ष), आचार्य अमृतचंद्र साहित्यरत्न पुरस्कार ऋषभ जैन दिल्ली (शास्त्री द्वितीय वर्ष) को प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री इन्द्रचंदजी कटारिया, श्री शांतिलालजी जैन अलवरवाले, श्री ताराचंदजी सोगानी, श्री कैलाशचंदजी सेठी, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित गोमटेशजी शास्त्री आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

आगामी कार्यक्रम...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अवसर पर

(1) बण्डा में 50 गाँवों में 50 बाल संस्कार शिविरों का आयोजन दिनांक 27 अप्रैल से 4 मई तक किया जा रहा है। इसमें डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर पधार रहे हैं। यदि आप अपने मंदिर में शिविर लगाना चाहते हैं, तो संपर्क करें - **पण्डित संदीप शास्त्री (09783414578)**

(2) झालावाड़, झालरापाटन, मंडाना, बारां आदि 51 स्थानों पर दिनांक 5 से 13 मई तक सातवाँ बाल संस्कार शिविर लगाया जा रहा है।

(3) भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी आदि एवं उत्तरप्रदेश के इटावा, औरया, मैनपुरी आदि कुल 101 स्थानों पर दिनांक 2 से 11 जून तक 12वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिविर का आयोजन हो रहा है।

(4) युवा फैडरेशन इन्द्रप्रस्थ धर्मांचल के अन्तर्गत श्री कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट दिल्ली एवं युवा फैडरेशन मेरठ के तत्त्वावधान में दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा के विभिन्न 40 स्थानों पर दिनांक 12 से 19 जून तक पाँचवाँ जैन जागृति शिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। अपने मंदिर में शिविर लगाने हेतु संपर्क करें- **पण्डित विवेक शास्त्री दिल्ली व सौरभ जैन (09818459105, 09897241464)**

(5) नागपुर में दिनांक 29 मई से 5 जून तक आवासीय शिविर का आयोजन हो रहा है।

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

पाठकों के पत्र...

टोडरमल स्मारक के 50वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक नागपुर (महा.) निवासी पण्डित विपिनजी शास्त्री लिखते हैं -

....महामांगलिक प्रसंग है कि संस्था अपने जीवन के 50 बसंत पूरे कर रही है। अनेक झंझावातों के बावजूद यह संस्था अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफल रही है। ये इस युग का महान आश्चर्य ही है कि जहाँ एक समय में एक साथ पूरे देश में 5-7 विद्वान हुआ करते थे, वहाँ आज एक-एक शहर में इतने विद्वान हैं।

आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार के सूत्र से बंधी यह संस्था कभी भी पथभ्रष्ट नहीं हुई। पूज्य गुरुदेवश्री की छत्रछाया में बना यह तत्त्वज्ञान का वह इकलौता जलाशय है, जहाँ तत्त्वपिपासु बिना किसी भेदभाव के भवतापहारी ज्ञानामृत का पान करते अघाते नहीं हैं।

गुजरात के अलावा भी यदि गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित श्रुतधारा का बोलबाला दिखाई देता है तो वह इस संस्था की दूरदृष्टि का ही सुफल है...मेरे जैसे ना जाने कितने सौभाग्शाली होंगे जो गुरुदेवश्री से प्रत्यक्ष श्रुत ना मिलने पर भी उस श्रुत रंग में रंगे हुये हैं...ना केवल रंगे हुये हैं; अपितु दूसरों को रंगने का सफल प्रयास भी कर रहे हैं। ये इस संस्था का ही कमाल है।

इस संस्था की उपयोगिता एक छोटे से प्रश्न के उत्तर में छुपी है कि यदि यह संस्था ना होती ''तो''? बस इससे अधिक यहाँ कुछ नहीं कहना है।

इस अवसर पर मैं उस कुशल प्रज्ञा को नमन करता हूँ, जिसने इस संस्था की प्रमुख व महत्वपूर्ण गतिविधि 'महाविद्यालय' का ताना-बाना बुना और उन मनीषियों को जिन्होंने विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान देकर उनके जीवन को सींचा और उन धनवानों को जिन्होंने बुरा कहे जाने वाले धन को भी भला कहने लायक बना दिया। ●

शोक समाचार

(1) कलकत्ता निवासी श्री महावीरप्रसादजी सरावगी का दिनांक 5 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। स्मारक भवन में महीनों रहकर आप प्रत्येक शिविर का नियमित लाभ लेते थे तथा टोडरमल स्मारक की गतिविधियों में भरपूर सहयोग करते थे।

(2) सिंगोड़ी (म.प्र.) निवासी श्री पुष्पचंद विमलकुमारजी जैन की माताजी एवं श्री राजेशकुमारजी शास्त्री की दादीजी **श्रीमती कंचनबाई जैन** का दिनांक 18 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में ज्ञानप्रचार हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 सीमंधर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर मंदिर ट्रस्ट गुना के अन्तर्गत पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं मुमुक्षु मण्डल गुना के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री 1008 महावीर दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शुक्रवार, दिनाँक 12 फरवरी से बुधवार 17 फरवरी 2016 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानंद सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, डॉ. विनोदजी चिन्मय, पण्डित मुकेशजी तन्मय, डॉ. राकेशजी नागपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर आदि अनेक विद्वानों का सानिध्य मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विवेकजी इन्दौर, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित सुकुमाल झांझरी, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशजी सनावद के सानिध्य में शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई।

बालक वर्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती संतोषनी-सुभाषजी सर्राफ विदिशा को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी इंजी अर्पण-कृति जैन बंधु गुना, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री पंकज-निधि जैन इन्दौर एवं महायज्ञनायक-नायिका इंजी सचिन-सुयशी जैन बंधु गुना थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन जैन जागृति महिला मंडल गुना, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री सुनीलकुमारजी शुभमजी भोपाल एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री अशोककुमारजी अनुरागजी गंजबासौदावाले गुना परिवार ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री जयपुर के करकमलों द्वारा किया गया।

बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री शांतिलालजी जैन अलवरवाले जयपुर को मिला। सर्वप्रथम पालना झूलन श्रीमती कुसुम-प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री प्रेमचंद ध्याता बजाज कोटा व श्री दिनेशजी अखिलेशजी सिंघई चेतन ट्राउजर इन्दौर को प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव में सीमंधर आदि 20 तीर्थंकर भगवान एवं पंच बालयति भगवान की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बालकक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। संपूर्ण कार्यक्रम में कोलकाता, राजकोट, मुम्बई, विदिशा, ग्वालियर, भोपाल, सागर, शिवपुरी आदि स्थानों से लगभग 5 हजार साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

कार्यक्रमों का मंच संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा तथा महोत्सव का निर्देशन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना द्वारा हुआ।●

टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

आदर्श पुरस्कारों की घोषणा

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पंचकल्याणक के चतुर्थ वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनाँक 28 फरवरी को महाविद्यालय में सत्र 2015-16 के आदर्श पुरस्कारों की घोषणा हुई। जिसमें उपाध्याय कनिष्ठ से दुर्लभ जैन गुड़ाचंद्रजी, उपाध्याय वरिष्ठ से अमन जैन दिल्ली, शास्त्री प्रथम वर्ष से प्रशांत जैन खेकड़ा, शास्त्री द्वितीय वर्ष से रमन जैन मौ, शास्त्री तृतीय वर्ष से सौरभ जैन फूप एवं समस्त कक्षाओं में से पारस जैन खेकड़ा (शास्त्री प्रथमवर्ष) आदर्श विद्यार्थी रहे।

सत्र की आदर्श कक्षा उपाध्याय कनिष्ठ चुनी गई। इसके अतिरिक्त श्रुत-आराधक विशेष पुरस्कार अच्युतकांत जैन जसवंतनगर (शास्त्री तृतीयवर्ष), चिकित्सा विभाग में विशेष योगदान हेतु ज्ञायक जैन अमरमऊ (शास्त्री द्वितीय वर्ष), विशेष उन्नति पुरस्कार जी.जगदीशन चैन्नई (उपाध्याय कनिष्ठ) को प्रदान किया गया। साथ ही कण्ठपाठ प्रतियोगिता के अन्तर्गत लगभग 30 विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, श्री शांतिलालजी जैन अलवरवाले, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती सुशीला जैन आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया। **- जिनकुमार शास्त्री, अधीक्षक**

समयसार शिविर व समयसार विधान संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ सिद्धायतन के 8 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 3 से 10 फरवरी को देश में प्रथम बार संपूर्ण समयसार मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ग्रन्थाधिराज समयसार पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा परिशिष्ट पर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा कर्ताकर्म अधिकार व सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा शेष समयसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रात:कालीन व्याख्यानमाला में क्रमश: पण्डित शुभमजी शास्त्री सिद्धायतन, ब्र. चंद्रेशजी शिवपुरी, ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित निखिलजी मुम्बई, पण्डित रूपचंद्रजी बण्डा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना एवं पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुम्बई द्वारा व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित विरागजी जबलपुर व पण्डित सुरेशचंदजी पिपरा आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

शिविर में लगभग 400 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। **- प्रद्युम्न फौजदार**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, विदिशा द्वारा आयोजित

50वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 15 मई 2016 से 1 जून 2016 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का भरपूर लाभ।
- ज्ञान-वैराग्य-अध्यात्म से भरे हुए आध्यात्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- श्रीजी एवं जिनवाणी की भव्य व विशाल शोभा यात्रा।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

हार्दिक अनुरोध :- श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन-0141-2705581, 2707458; Email - ptstjaipur@yahoo.com

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 मार्च से 6 अप्रैल	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन
4 से 7 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
8 मई	दिल्ली	उपकार दिवस
15 मई से 1 जून	विदिशा	प्रशिक्षण शिविर
15 जून से 15 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्मप्रचारार्थ

सेठ श्री पूरनचंदजी गोदिका एवं
उनकी धर्मपत्नी
श्रीमती कमलाबाई गोदिका,

श्री टोडरमल स्मारक भवन
का शिलान्यास करते हुये

श्री खीमचंदभाई सेठ राजकोट
एवं उनके भाई श्री मनीभाई सेठ

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

इतिहास के झरोखे से...

मार्च 1967 में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन के उद्घाटन समारोह के अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सान्निध्य में आयोजित सभा में बोलते हुये ट्रस्ट के संस्थापक महामंत्री पण्डित नेमिचंदजी पाटनी आगरा; इसके अलावा ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष श्री पूरनचंदजी गोदिका, सोनगढ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नवनीतभाई जवेरी मुम्बई, तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष साहू शांतिप्रसादजी दिल्ली, पण्डित कैलाशचंदजी सिद्धांतशास्त्री बनारस, श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर, पण्डित खीमचंदभाई सेठ राजकोट इत्यादि गणमान्य महानुभाव मंचासीन दिखाई दे रहे हैं।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुये सेठ श्री पूरनचंदजी गादिका एवं श्रीमती कमलाबाई गोदिका

श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित श्री सीमंधर जिनालय की मंगल वेदी प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के करकमलों से

वेदी शुद्धि हेतु घटयात्रा में महिलाओं के साथ मंगल कलश लेकर चलती हुई बहनश्री चम्पाबेन एवं बहनश्री शांताबेन

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**